પોલીસી અને પ્રોગ્રામ

સન. 2025-26, હિ. 1446-47

SIO GUJARAT

“અલ્લાહના માર્ગદર્શન મુજબ સમાજની નવરચના માટે વિદ્યાર્થીઓ અને નવયુવાનોને તૈયાર કરવા”

राष्ट्रीय अध्यक्ष का पैग़ाम

अज़ीज़ भाइयो!
अस्सलामुअलैकुम वरहमतुल्लाही वबरकातहु!

अल्लाह के फ़ज़्ल-ओ-करम से एस.आई.ओ. के इस अज़ीमुश्शान कारवां की 22वीं मीक़ात का आग़ाज़ हो रहा है। इन 42 सालों की तारीख़ में एस.आई.ओ. ने लाखों तलबा और नौजवानों की ज़िंदगियों को इलाही हिदायात की रौशनी से मुनव्वर किया, और मोहल्ला, घर, कैंपस, तालीम, अकेडेमिया, मुल्क व मिल्लत की तामीर वग़ैरह जैसे कई मैदानों में अनमिट नक़्श छोड़े हैं। अल्लाह के फ़ज़्ल-ओ-करम के बाद यह हमारे साबिक़ा ज़िम्मेदारान और वाबस्तगान-ए-तंज़ीम की क़ुर्बानियों और उनकी अनथक जद्दोजहद का समर है, जिसकी वजह से हम अब इस मक़ाम पर पहुँचे हैं।

दोस्तो!
एस.आई.ओ. तलबा और नौजवानों को तैयार करना चाहती है; "इलाही हिदायात की रौशनी से समाज को मुनव्वर करने" के मुक़द्दस मिशन के लिए!
हमारी तैयारी की पहली ज़रूरत ये है कि हमारा तअल्लुक़ अपने रब से मज़बूत हो। अल्लाह की किताब और उसके रसूल ﷺ से हमारी गहरी वाबस्तगी हो। यह हमारी तहरीक की रूह है। इसीलिए पॉलिसी में फ़राइज़ की पाबंदी और क़ुरआन से वाबस्तगी पर ज़ोर दिया गया है। हमारा तंज़ीमी माहौल क़ुरआनी माहौल बनना चाहिए।

मरकज़ी शूरा का यह भी शदीद एहसास रहा है कि हमारी अफ़रादी क़ुव्वत में तेज़ रफ़्तार इज़ाफ़ा हो। हज़ारों तलबा और नौजवानों को कारवां का हिस्सा बनाने और अपने दायरा-ए-असर को वसीअ करने की ज़रूरत है। तमाम हलक़े, ख़ास तौर पर जिन हलक़ों में तंज़ीम कमज़ोर है, वहाँ अफ़रादी क़ुव्वत को बढ़ाने के लिए पॉलिसी व प्रोग्राम में ख़ास तवज्जो दिलाई गई है। इस सिलसिले में हमें शऊरी और तेज़ रफ़्तार क़दम उठाने की ज़रूरत है।

शूरा ने मौजूदा नस्ल के मसाइल और मिल्लत-ए-इस्लामिया की सूरत-ए-हाल पर भी भरपूर ग़ौर-ओ-फ़िक्र और तबादला-ए-ख़याल किया है। जदीद तसव्वुर-ए-ज़िंदगी ने तलबा और नौजवानों में इंतिशार और फ़िक्री सतहीयत की हामिल ख़्वाहिशात की बंदगी, तकासुर व लग़वियात में मुलव्विस नस्ल को जन्म दिया है और कम्युनिकेशन टेक्नोलॉजी की तेज़ रफ़्तार तरक़्क़ी ने इन फ़िक्री और अमली बे-ऐतदालियों को जन्म देने में बहुत आसानी और सहूलतें फ़राहम की हैं। जिससे नई नस्ल में जिन्सी बेराहरवी और नफ़्सियाती मसाइल पैदा हो रहे हैं। इन मसाइल और चैलेंजों से मुख़ातिब होने के लिए नई पॉलिसी को मुतार्रिफ़ कराया गया है। इस ज़िमन में हया और अख़लाक़ी हस्सासियत पैदा करने, दावती बयानिया की तैयारी, अमली रहनुमाई और इससे मुतअल्लिक़ प्लेटफ़ॉर्म्स फराहम करने की कोशिश की जाएगी।

हिंदुस्तानी मुसलमानों को दरपेश संगीन ख़तरात, ख़ास तौर पर मुनज़्ज़म और मंसूबा बंद अंदाज़ में उनकी तहज़ीबी शनाख़्त को मिटाने की कोशिशें, शहरीयत बिल, वक़्फ़ बिल, बुलडोज़र सियासत वग़ैरह जैसे उमूर तवज्जो तलब हैं। मिल्लत-ए-इस्लामिया-ए-हिंद के इन ख़ास मसाइल को सही तनाज़ुर में समझने, इनके ख़िलाफ़ आवाज़ उठाने और तलबा व नौजवानों को इस्लामी उसूलों की रौशनी में क़याम-ए-अदल के लिए मुतहर्रिक और आमादा किया जाएगा।

इसके अलावा तवील-उल-मियाद जद्दोजहद के लिए दावत-ए-दीन के फ़रीज़े की अदायगी और इस्ते'दादसाज़ी के महाज़ों पर काम करने के साथ-साथ फ़िक्र-ए-इस्लामी, तालीम, कैंपस, आर्ट्स और कल्चर, माहौलियात वग़ैरह के मैदानों में भी पेशरफ़्त की ज़रूरत महसूस होती है।

दोस्तो!
इस नक़्शे में रंग भरने के लिए हमारे सारे मेम्बर्स और वाबस्तगान को कमरबस्ता होना होगा। आईए! अल्लाह पर भरोसा करते हुए, इस कारवां को तेज़ रफ़्तारी के साथ सही सिम्त में आगे बढ़ाने के लिए काम करते हैं। क्योंकि अल्लाह ही हमें कामयाबी और नुसरत से हमकिनार करता है।

وَمَا ٱلنَّصۡرُ إِلَّا مِنۡ عِندِ ٱللَّهِ ٱلۡعَزِيزِ ٱلۡحَكِيمِ

सहायता तो बस अल्लाह ही के यहाँ से आती है जो अत्यन्त प्रभुत्वशाली और तत्वदर्शी है। (कुरआन 3:126)

मुहम्मद अब्दुल हफ़ीज़
राष्ट्रीय अध्यक्ष
एस.आई.ओ. ऑफ़ इंडिया
9 रजब 1446
8 जनवरी 2025

प्रदेश अध्यक्षका संदेश

अल्लाह का शुक्र है बुलंद अज़ाईम के साथ नई मिक़ात की शुरुआत हो चुकी है। पिछली कई मीक़ातो से SIO गुजरात अलग अलग महाज़ो पर काम कर रही है। ख़ुसूसन तौसी व् इस्तेहकाम हमारी तवज्जो का मुस्तहिक रहा है जिसके नतीजे में अफ़रादे तंजीम की तादाद में इजाफा हुआ है। गुजरात में भी तंज़ीम ने एक लम्बा सफर तय किया है। साल 2000 में डेवेलॉपिंग जोन से ज़ोन बनने के बाद से हमारी सरगर्मियों में इज़ाफ़ा होता रहा। हमारा सोश्यल इंगेजमनेट बढ़ा और तलबा में काम का इज़ाफ़ा हुआ। बिल खुसूस साल 2017 से मेम्बरान की तादाद में मुसलसल इजाफा हुआ है। युवासाथी मेगेजीन भी SIO गुजरात का एक नुमाया काम है जिसकी वजह से इस्लाम की सही तस्वीर लोगो तक पहुंची है और तंजीम के तारुफ में भी मदद मिली है। रियासत के मख़्सूस तालीमी व सियासी मुद्दों पर मुसलसल काम किया गया है। इस सफर पर हमें अल्लाह की बारगाह में शुक्रिया कलिमात अदा करने चाहिए। और आइंदा भी अपनी मंजिल की तरफ तेज़ रफ्तार बढ़ने के लिए अज़्मे मुसम्मम करना चाहिए।

मंज़िल को पाएंगे हम बेढ़ा उठा चुके हैं
कुछ रास्ता है बाकि कुछ दूर आ चुके हैं

अज़ीज़ दोस्तों , किसी भी समाज में इम्पैक्टफुल काम करने के लिए जरुरी है के हम अफ़रादे तंज़ीम को इस तरह तैयार करें की फर्द अपनी किरदारसाज़ी पर मुसलसल तवज्जो दें। उनके नफ़्स का तज़किया और सलाहियतों में इजाफा हो ताकि वो एक तनावर दरख्त बन कर समाज की तश्किले नो में अपना कंट्रीब्यूशन दे सकें। यह काम जितना कमिटमेंट चाहता है उससे कही ज़्यादा ताल्लुक़ बिल्लाह की मजबूती का तकाज़ा करता है। वाबस्तगाने तंजीम फराइज की पाबंदी करने वाले , क़ुरआन से गहरा ताल्लुक़ रखने वाले नीज़ सीरते रसूल (स.अ.व.) और अहादीस से शऊरी इस्तेफ़ादा करने वाले होने चाहिए। इस्लामी लिट्रेचर का इतना मुतालिआ जरूर होना चाहिए कि वो दौरे जदीद की ज़हिलियत को समझ सकें।

ZAC ने गुजरात के मख़्सूस समाजी व सियासी हालात को सामने रखते हुए मंसूबाबन्दी की हैं , मीक़ात के पहले साल में हमें तालीम पर खास फोकस करना है, इस

सिलसिले में तल्बा व् नवजवानों का म्यार बुलंद करने के साथ तालीम के मकसद से वाकिफ कराना होगा, तालीमी इदारों के मसाइल को हल करने की भरपूर कोशिश करनी होगी। समाज में बढ़ती हुई नफ़रत के मुकाबले अमन की फ़िजा आम करने , इस्लाम और मुसलमानो से मुतल्लिक गलतफहमिया दूर करने की तरफ भी खुसूसी तवज्जो करनी होगी। साल भर के कामो के नतीजे में हम ये भी चाहते हैं कि तंज़ीम का तार्रुफ़ समाज के बड़े हिस्से तक पहुंचे।

SIO पूरे मुल्क में स्टूडेंट ओरिएंटेड बनने की तरफ गामज़न है, इस सिलसिले में हमें गुजरात के कैंपसीस में तंज़ीम के काम की तोसीअ करने की जरुरत है। जो अफ़राद तालीमी इदारों में पढ़ते हैं उनकी दोहरी जिम्मेदारी है कि वो खुसूसी तवज्जो फरमाएं। कैंपसिस में तालीमी और अख़लाक़ी माहौल बनाया जाए। तलबा और नवजवानों के मसाइल हल किए जाएं, उन्हें एक जिम्मेदार शहरी बनाया जाए ताकि वो जम्हूरी कद्रों की हिफाजत कर सके।

दोस्तों, इन तमाम कामों की कामयाबी के लिए जरुरी है की बड़ी तादाद में तलबा व नवजवान तंज़ीम से वाबस्ता हो। जिन इलाक़ों में अभी काम कमजोर है या हम नहीं पहुंच पाए है वहाँ पर भी काम को फैलाने की जरुरत हे। हम ये चाहते हैं की हर फर्द ये अहद करे की तंज़ीम की मजबूती के लिए में 5 नए अफ़राद तक तंज़ीम के तारुफ को ले जाऊंगा और उन्हें तंज़ीम का हिस्सा बनाऊगा।

में अल्लाह रब्बुल इज्जत की बारगाह में दुआ करता हूँ की वो हमें हमारे मक़सद में कामयाब करे , हमे हिम्मत , क़ूवत, इल्म व हिकमत और सब्र की दौलत से नवाजे , हमारे कामो को क़बूल करे और हमारा शुमार सफे अव्वल के लोगो में फरमाए। जिस तरह हम यहाँ अल्लाह की ख़ुशनूदी के लिए इज्तेमाई जद्दोजहद कर रहे हैं उसी तरह कल आख़ेरत में जन्नुत फिरदोस में हमें जमा करे (आमीन)

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُواكُونُوا أَنْصَارَ اللَّهِ

ऐ लोगो, जो ईमान लाए हो! अल्लाह के मददगार बनो,

मुनव्वर हुसैन

सदरे हल्का , SIO गुजरात

तंज़ीम के अफ़राद अल्लाह से ताल्लुक़ को अपनी बुनियादी ज़रूरत समझते हुए, रुहानी इरतिक़ा और हमाजिहत तज़किया के लिए मुस्तक़िल कोशिश करेंगे। इस सिलसिले में बुनियादी फ़राएज़ की पाबंदी और क़ुरआन से वाबस्तगी पर ख़ास तवज्जोह देंगे। तंज़ीम इस सिलसिले में रहनुमाई और इज्तेमाई माहौल फ़राहम करेगी।

अल्लाह और रसूल (सल्ल.) से वालिहाना मोहब्बत और फ़िक्र-ए-आख़िरत का फ़र्द के तज़किया और तरबियत में अहम रोल है। तज़किया के लिए मरासिम-ए-उबूदियत, ख़ुशू और ख़ुज़ू के साथ नमाज़ों के एहतमाम, फ़राएज़ की ब-हुस्न-ओ-ख़ूबी अदायगी और क़ुरआन मजीद से मज़बूत ताल्लुक़ की अहमियत सबसे अहम है।

तज़किया का असर हमारे शरीर के साथ-साथ हमारे क़ल्ब की सभी फ़िक्री और जज़्बाती कैफ़ियात यानी ज़िन्दगी के हर गोशे में इस तरह नज़र आना चाहिए कि उससे ईमान में पुख़्तगी व हलावत, क़ल्ब में पाकीज़गी, अमल में इस्तक़लाल, शख़्सियत में नाफ़ईयत, अख़लाक़ में हुस्न और सलाहियतों में इरतिक़ा हो।

ख़ुदा से दायमी रब्त के लिए नवाफ़िल, दुआ, ज़िक्र-ओ-अस्तग़फ़ार के साथ, दुनिया की बे-सबाती का एहसास, तकासुर व लग़वियात और ख़ुदनुमाई व रियाकारी से परहेज़, वग़ैरह पर तवज्जो हो। अल्लाह की राह में जद्दोजहद भी तज़किया का अहम हिस्सा है।

रुहानी इरतिक़ा जिस्म और रुह के तक़ाज़ों के सही इदराक और दोनों के दरमियान कामिल तवाज़ुन रखना, साथ ही ख़ुदा से जुड़ने की इंसान की फ़ितरी हिस को वही की रोशनी में नशो-नुमा देने का नाम है। जिस्मानी सेहत का ख़्याल रखते हुए रुह के तक़ाज़ों को तरजीह हासिल होनी चाहिए। इस सिलसिले में तवक्कल, सब्र, शुक्र और एहसान जैसी सिफ़ात को परवान चढ़ाने की ज़रूरत है।

तज़किया में तन्ज़ीम और तहरीक-ए-इस्लामी के अफ़राद के साथ सेहतमंद बाहमी ताल्लुक़ात, अच्छी संगत और ख़ुद एहतिसाबी भी ज़रूरी है। मौजूदा दौर ने नौजवानों के लिए तरह-तरह के नफ़्सियाती और अख़लाक़ी चैलेंज पेश किए हैं। इस सिलसिले में ज़िन्दगी में मानवीयत, फ़िक्र-ओ-नज़र में इरतिक़ाज़ और मुख़्तलिफ़ लतों से छुटकारा पाने की कोशिशों वगैरह पर भरपूर तवज्जो देने की ज़रूरत है। तज़किया के सिलसिले में इज्तेमाईयत की ज़िम्मेदारी है कि वह फ़र्द को माहौल, मुहर्रिकात और रहनुमाई फ़राहम करे।

एसआईओ छात्रों और नौजवानों में हया और अख़लाक़ी हस्सासियत को परवान चढ़ाएगी। जदीद तसव्वुर-ए-ज़िन्दगी और वर्ल्डव्यू से पैदाशुदा जिंसी बेराहरवी और नफ़्सियाती मसाइल को मुख़ातिब करते हुए इल्मी और अमली कोशिशें करेगी।

हया इस्लाम की बुनियादी क़द्र है। हया और अख़लाक़ी हस्सासियत वो लाज़मी सिफ़त है जो इनफ़िरादी किरदार और समाज की सूरतगरी करते हैं। नफ़्स की बेलगाम आज़ादी और माद्दापरस्ती को जिला देने वाले जदीद वर्ल्डव्यू के चैलेंज ने जिंसी बेराहरवी और नफ़्सियाती मसाइल को जन्म दिया है। मीडिया के बढ़ते हुए असर, बदलते सक़ाफ़ती अक़्दार और अख़लाक़ी उसूलों के ज़वाल के नतीजे में ये चैलेंज और ज़्यादा शिद्दत इख़्तियार कर गए हैं। ख़ास तौर पर नौजवान इस दबाव का सामना करते हुए उलझनों और अख़लाक़ी गिरावट का शिकार हो रहे हैं, जिसकी वजह से ग़ैर अख़लाक़ी रवैये और नफ़्सियाती सेहत के मसाइल पैदा हो रहे हैं।

इस्लामी तंज़ीम के तौर पर एसआईओ अपनी ज़िम्मेदारी समझती है कि छात्रों और नौजवानों को इस्लामी अक़्दार पर आधारित ज़िन्दगी गुज़ारने के लिए रहनुमाई फराहम करे। तंज़ीम जदीद वर्ल्डव्यू की फ़लसफ़ियाना बुनियादों, इनफ़िरादी व इज्तेमाई रवैयों और अख़लाक़ियात पर उसके असर का तनक़ीदी जायज़ा लेगी।

छात्रों और नौजवानों को साइबर स्पेस, पुरुष एवं स्त्री के बीच ताल्लुक़ात के हुदूद और अख़लाक़ी मसाइल की पेचीदगियों के हल के लिए सहयोग करने और बेहतर अख़लाक़ी रवैयों के फ़रोग़ के लिए भी अमली इक़दामात करेगी। इस सिलसिले में तंज़ीम बातचीत, काउंसलिंग और सपोर्ट सिस्टम के ज़रिए वसाइल और प्लेटफ़ॉर्म्स की तैयारी पर तवज्जो देगी।

तंज़ीम के अफ़राद इनफ़िरादी मुता'अला और ग़ौर-ओ-फ़िक्र के ज़रिए अपने इल्मी और फ़िक्री इरतिक़ा और तज़किया के लिए मुस्तक़िल कोशिश करते रहेंगे इस सिलसिले में तंज़ीम उनके लिए इज्तेमाई माहौल फ़राहम करेगी।

मुता'अला फ़र्द की ज़हनी व फ़िक्री ग़िज़ा और तज़किया का अहम ज़रिया है। दुनिया के रहनुमाई के लिए सरसरी क़िस्म की जानकारी नहीं, बल्कि गहरे, मुनज़्ज़म और मरबूत मुता'अले की ज़रूरत है। एसआईओ इस बात की कोशिश करेगी कि छात्रों, ख़ास तौर पर तंज़ीम के अफ़राद, में मुता'अले का रुझान परवान चढ़े, उनके इल्म में गहराई और फ़िक्र में पुख़्तगी पैदा हो।

मुता’अला चाहे किताब का हो या कायनात का, ग़ौर-ओ-फ़िक्र, तदब्बुर और नाक़िदाना तजज़िया उसकी बुनियादी असास हैं। इस सिलसिले में क़ुरआन, हदीस व सीरत के मुता’अले की अहमियत सबसे ज़्यादा है। क़ुरआन से वाबस्तगी तिलावत से शुरू होकर हिफ़्ज़, तदब्बुर, अमल और दावत-ए-दीन तक जारी रहती है। वहीं आप (सल्ल.) की सीरत के मुस्तक़िल मुता’अले और याददिहानी से मोमिन इल्मी और अमली जद्दोजहद के लिए जज़्बा हासिल करते हैं। साथ ही, इस्लामी तहरीक की असासी फ़िक्र को गहराई से समझने पर भी भरपूर तवज्जो दी जाए।

ज़बान-ओ-अदब से बेहतर वाक़िफ़ीयत, मुता’अले का शौक़, इल्मी ज़ौक़, दानाई और इज़हार-ए-बयान की सलाहियत पैदा करती है। आफ़ाक़-ओ-अनफ़ुस की निशानियों पर ग़ौर-ओ-फ़िक्र के नतीजे में दिल को इत्मीनान और गहरी बसीरत पैदा होती है।

एसआईओ फ़िक्र-ए-इस्लामी की तशकील व इरतिक़ा के ज़रिए ज़िन्दगी के विभिन्न क्षेत्रों में इस्लामी पैराडाइम और नैरेटिव की तैयारी और प्रचार-प्रसार पर विशेष ध्यान देगी।

हर फ़िक्र और नज़रिए के पीछे एक वर्ल्ड व्यू होता है। इस्लाम का अपना वर्ल्ड व्यू है, जिसकी रौशनी में मौजूदा दौर के ग़ालिब फ़िक्री और इल्मी रुझानों का तनक़ीदी जायज़ा लिया जाएगा। साथ ही फ़िक्र-ए-इस्लामी के हवाले से होने वाली इल्मी और तहक़ीक़ी कोशिशों से परिचय और इस सफ़र को आगे बढ़ाने के लिए तंज़ीम के अफ़राद में ज़ौक और शौक़ और मतलूबा सलाहियतें पैदा करने की कोशिश की जाएगी। इस काम के लिए उन्हें एक तरफ़ फ़िक्र-ए-इस्लामी के मसादिर यानि क़ुरआन व सुन्नत के साथ-साथ इस्लाम की इल्मी रिवायत से गहरी वाक़िफ़ीयत पैदा करने की कोशिश की जाएगी। साथ ही मौजूदा समाज की ज़बान और डिस्कोर्स का गहरा मुता’अला किया जाएगा ताकि आ’ला और इल्मी सतह पर उनका विकल्प प्रस्तुत किया जा सके।

एसआईओ छात्रों और नौजवानों को बिरादरान-ए-वतन के साथ मज़बूत संबंध बनाने के लिए प्रोत्साहित करेगी और उनमें 'दाईयाना किरदार' को परवान चढ़ाने के लिए लगातार कोशिश करेगी।

मुस्लिम उम्मत की असल पहचान अल्लाह तआला के रास्ते की तरफ़ बुलाने वाले गिरोह की है। इस बड़ी ज़िम्मेदारी की अदायगी के लिए ज़रूरी है कि मुस्लिम उम्मत में इस ज़िम्मेदारी के प्रति जागरूकता, परोपकार की भावना, अपने शब्दों और व्यवहार के माध्यम से इस्लाम की सही छवि पेश करने का जज़्बा परवान चढ़ाया जाए। इसलिए छात्रों और नौजवानों में 'दाईयाना किरदार' को इस तरह से बढ़ावा दिया जाए कि उनकी सभी इनफ़िरादी और इज्तेमाई सरगर्मियों में दावती पहलू नुमायां हो और वे दावत-ए-दीन को अपनी ज़िम्मेदारी समझते हुए पूरे विश्वास, तड़प, हिकमत और इल्मी व अमली तैयारी के साथ हर मोर्चे पर इस्लाम की नुमाइंदगी करें।

मौजूदा दौर में नफ़रती प्रोपगैंडे और तअस्सुब के ज़रिए समाज में मौजूद विभिन्न गिरोहों के बीच खाई पैदा करने के लिए लगातार योजनाबद्ध कोशिशें की जा रही हैं। दावत-ए-दीन की ज़िम्मेदारी की अदायगी के लिए ज़रूरी है कि समाज के विभिन्न लोगों व समूहों के बीच पाई जाने वाली नफ़रत और दूरियों का अंत हो और आपस में विश्वास, सहयोग व निकटता का माहौल बने।

एसआईओ मुल्क के ख़ास मज़हबी और समाजी पसेमंज़र को ध्यान में रखते हुए इस्लामी अक़ाएद की वास्तविकता और ज़रूरत को स्पष्ट करेगी।

लोगों के ख़ास मज़हबी और समाजी पसेमंज़र को ध्यान में रखते हुए, इस्लामी मान्यताओं की वास्तविकता स्पष्ट करना दावत-ए-दीन की मूल आवश्यकता है। इस बात पर भी ख़ास ध्यान दिया जाना चाहिए कि दावत-ए-दीन के इनफ़िरादी और इज्तेमाई कोशिशों के नतीजे में लोग इस्लाम को अपनी बुनियादी ज़रूरत, दुनिया में कामयाबी और आख़िरत में निजात का ज़रिया समझने लगें।

दावत-ए-दीन की अमली जद्दोजहद के साथ-साथ इस्लाम के नज़रियाती डिस्कोर्स को शैक्षणिक क्षेत्रों, ख़ासकर कैंपसों में, चर्चा का विषय बनाया जाना चाहिए। इसके अलावा भारतीय समाज की समझ को लेकर ऐसे एकेडमिक काम और रिसर्च की ज़रूरत है जो लोगों के लिए दावत की कोशिशों में मददगार साबित हो।

एसआईओ छात्रों एवं नौजवानों की शैक्षणिक, आर्थिक व राजनीतिक प्रतिभाओं को बढ़ाने पर विशेष ध्यान देगी।

किसी भी सामाजिक आंदोलन की कामयाबी के लिए यह शर्त है कि उसके पास आला रूहानी और अख़लाक़ी किरदार के हामिल ऐसे अफ़राद हों जो कुव्वत के मराकिज़, ख़ास तौर पर तालीमी, मुआशी और सियासी मैदान में अपना अलग मुक़ाम रखते हों। क्षमता निर्माण (इस्तेदाद साज़ी) भी तज़किया के वसीअ' तसव्वुर का एक लाज़मी हिस्सा है। इस तनाज़ुर में, एसआईओ आवश्यक ट्रेनिंग और संसाधन प्रदान करके अपने सदस्यों और छात्रों व नौजवानों की क्षमता का निर्माण करेगी। साथ ही, उनके व्यक्तित्व में लाभकारी गुणों की भावना विकसित करने, उनकी ईश्वर प्रदत्त प्रतिभाओं को पहचानने, पोषित करने व उपयोग करने के लिए उन्हें प्रोत्साहित करेगी। इस कोशिश के नतीजे में हासिल होने वाली सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक योग्यताएं एवं प्रतिभाएं संगठन, आंदोलन और समाज के लिए क़ीमती धरोहर साबित होंगी।

समाज की तालीमी तरक़्क़ी विभिन्न प्रकार के ज्ञान एवं विचारधाराओं से निरंतर जुड़ाव पर निर्भर है। इस सिलसिले में यह ज़रूरी है कि छात्रों को उनके छात्र जीवन में विभिन्न स्तरों तकनीकी कौशल और कैरियर गाइडेंस मिलती रहे और वो तालीमी महारत हासिल करें। Framing Academia प्रॉजेक्ट के तहत तंज़ीम विभिन्न स्तरों पर ओरिएंटेशन और ट्रेनिंग के ज़रिए यूनिवर्सिटीज़ व उच्च अकादमिक संस्थानों में दाख़िलों के लिए कोशिश कर रही है।

छात्रों और नौजवानों में आर्थिक आत्मनिर्भरता पैदा करने और दूसरों के लिए आर्थिक अवसर प्रदान करने की क्षमता विकसित करने के लिए, उनमें उद्यमिता की भावना और प्रतिभा को विकसित करना आवश्यक है। इस सिलसिले में इंक्यूबेशन सेंटर्स, चैंबर्स ऑफ़ कॉमर्स तथा स्वयं सहायता समूहों से भी मदद ली जा सकती है।

आमतौर पर चुनावों व राजनीतिक दलों की गतिविधियों को ही राजनीति समझा जाता है। राजनीति जैसे जीवन के जटिल क्षेत्र की यह एक बहुत ही सीमित समझ है। इस संबंध में, समाज में शक्ति के केंद्रों, उनके बीच की बातचीत और पूरे तंत्र को समझने के साथ-साथ अपने मत की वकालत करना, विभिन्न व्यक्तियों और समूहों के साथ सहयोग करना और अपने पक्ष में राय बनाना जैसी क्षमताओं को विकसित करने के पूरे प्रयास होने चाहिए। क्षमता निर्माण और जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में प्रतिभाओं के विकास के ज़रिए हमारे प्रभाव क्षेत्र का विस्तार होगा।

एसआईओ अपने वर्क कल्चर और तंज़ीमी ढांचे का विस्तार करेगी ताकि उसका सामाजिक जुड़ाव बढ़े, बड़ी संख्या में छात्र और नौजवान उसके काम में भागीदार बनें और उसके सदस्यों की सलाहियतों के प्रभावी इस्तेमाल का मार्ग प्रशस्त हो। इस उद्देश्य के लिए संगठन नोड्स एवं फ़ोरम्स की संभावनाएं और अवसर तलाश करेगा।

अपने लक्ष्यों और उद्देश्यों को हासिल करने के लिए, एसआईओ को अपने तंज़ीमी ढांचे और काम करने के तरीक़े में व्यापकता और समावेशिता लाने की आवश्यकता है। इस संदर्भ में मौजूदा नोड्स (व्यक्तियों/समूहों द्वारा की गई पहल या मंच/क्लब/फ़ोरम आदि) के साथ परस्पर संबंध बनाकर और नए नोड्स की स्थापना के माध्यम से सामाजिक प्रभाव का मार्ग प्रशस्त करने का प्रयास किया जाएगा। ज़ोन, यूनिट्स इस काम को उनकी क्षमता, अवसरों और संभावनाओं के आधार पर बुनियादी तंज़ीमी कामों और ढांचे को प्रभावित किए बिना बढ़ावा देने का प्रयास करेंगे। तंज़ीम के अफ़राद अपनी सलाहियत, दिलचस्पी और रुझान के आधार पर इन नोड्स के माध्यम से विभिन्न मोर्चों पर स्थायी, ख़ुसूसी और नतीजा ख़ेज़ कामों पर ध्यान देंगे। इन नोड्स के माध्यम से यह प्रयास किया जाएगा कि संगठन का सामाजिक संपर्क बढ़े और बड़ी संख्या में आम छात्रों और नौजवानों को संगठन के विभिन्न उद्देश्यों के लिए उसके काम में सहायक बनाया जा सके।

एसआईओ चयनित छात्रों और संस्थानों के साथ मिलकर इल्म और तालीम के मौजूदा फ़लसफ़े और Pedagogy का तनक़ीदी जायज़ा लेगी। साथ ही, इस्लामी फ़लसफ़ा-ए-इल्म व तालीम को तैयार करने व प्रचार करने के लिए कोशिश करेगी।

इस्लाम, इल्म और तालीम का अपना फ़लसफ़ा रखता है, जो इस्लाम के व्यापक वर्ल्ड व्यू का नतीजा है। एक वैचारिक संगठन के तौर पर, यह हमारा कर्तव्य है कि हम इस्लामी फ़लसफ़ा-ए-इल्म की रौशनी में मौजूदा तालीमी नज़रियात और पेडागॉजी के तनक़ीदी जायज़े के साथ-साथ इल्म के पुनर्निर्माण का ज़रूरी काम करें। इसके लिए ज़रूरी है कि हम इस विषय पर कुछ ठोस इल्मी और तहक़ीक़ी क़दम उठाएं। इसके लिए तंज़ीम के अफ़राद की तैयारी और माहौल की फ़राहमी पर ख़ास तवज्जो दी जाएगी। तंज़ीम अपने अफ़राद को प्रोत्साहित करेगी कि वे इस काम को अपनी शैक्षणिक गतिविधियों का हिस्सा बनाएं। साथ ही तंज़ीम इस्लामी फ़लसफ़ा-ए-इल्म व तालीम को देश के प्रमुख संस्थानों में चर्चा का विषय बनाने के लिए चयनित व्यक्तियों का तआवुन करेगी।

एसआईओ शिक्षा में इंसाफ़, पहुंच और गुणवत्ता के लिए संघर्ष करते हुए सरकारी नीतियों को प्रभावित करने का प्रयास करेगी। साथ ही, शिक्षा के व्यवसायीकरण और पाठ्यक्रम व इतिहास की पाठयपुस्तकों में छेड़छाड़ जैसे विषयों का आलोचनात्मक अध्ययन किया जाएगा।

देश के आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक क्षेत्रों के साथ-साथ शिक्षा के क्षेत्र में भी समाजी इंसाफ़ के लिए जद्दोजहद करने की ज़रूरत रही है। शिक्षा के क्षेत्र में देश के मुसलमानों और अन्य पिछड़े वर्गों के साथ नाइंसाफ़ी और ज़ुल्म, उन्हें उच्च शिक्षा से दूर रखने के प्रयास, मादरी ज़बान में शिक्षा के अवसरों का प्रावधान न करना और उन्हें समान और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा से जानबूझकर दूर रखने के प्रयास आज भी जारी हैं। इसके अलावा ज़बरदस्त प्रतियोगिता के माहौल ने भी छात्रों पर बड़ा असर डाला है। एक बेहतर समाज बनाने के लिए, इन समस्याओं को हल करने के प्रयास हमारी जद्दोजहद का हिस्सा होना चाहिए। इसी प्रकार मूल्य और नैतिकता वर्तमान शिक्षा प्रणाली में ध्यान देने योग्य नहीं माने जाते हैं। यही कारण है कि कई अनैतिक तत्व शिक्षा तंत्र में शामिल हो रहे हैं। पाठ्यक्रमों में एक ख़ास संस्कृति को थोपने और उसके ज़रिए नफ़रत फैलाने की कोशिश की जा रही है, जिनका नोटिस लिया जाना ज़रूरी है। इन सभी पहलुओं को ध्यान में रखते हुए एसआईओ शिक्षा के इन सवालों पर चर्चा करेगी और देश की शैक्षणिक नीतियों और एजेंडे को भी प्रभावित करने की कोशिश करेगी। साथ ही, संगठन के कार्यकर्ताओं में शैक्षणिक पाठ्यक्रम की आलोचनात्मक समझ विकसित करने का प्रयास भी किया जाएगा।

एसआईओ यूनिवर्सिटियों और प्रोफ़ेशनल कैंपसों में बेहतर नैतिक और लोकतांत्रिक माहौल बनाने का प्रयास करेगी। साथ ही, छात्रों को आइडिया ऑफ़ यूनिवर्सिटी, कैंपस कल्चर और डिस्कोर्स पर असर अंदाज़ होने के तैयार करेगी।

कैंपस तहरीक-ए-इस्लामी की जद्दोजहद का अहम मैदान रहे हैं। तहरीक जिस सामाजिक तब्दीली का ख़्वाब देखती है, उसे साकार करने के लिए कैंपसों और प्रोफ़ेशनल इदारों में इल्मी और नज़रियाती कोशिशें ज़रूरी हैं। इस सिलसिले में, एसआईओ छात्रों को कैंपस के इल्मी डिस्कोर्स और कल्चर को प्रभावित करने के लिए तैयार करेगी। साथ ही, यूनिवर्सिटी, इल्म और तालीम के विचार को इस्लामी दृष्टिकोण से चर्चा का विषय बनाने की कोशिश करेगी।

तंज़ीम के अफ़राद इस्लामी मूल्यों की बुनियाद पर मुख़्तलिफ़ सरगर्मियों के ज़रिए कैंपस कल्चर को प्रभावित करने की कोशिश करेंगे। इस सिलसिले में प्रोफ़ेशनल कैंपसों पर ख़ास ध्यान दिया जाएगा। वहां के छात्रों की ख़ास ज़रुरतों को ध्यान में रखते हुए एक बेहतर कार्ययोजना पेश करने की तरफ़ तवज्जो दी जाएगी।

कैंपस में जम्हूरी माहौल का होना बहुत ज़रूरी है। एसआईओ तालीमी इदारों में में समानता, न्याय और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करने और जम्हूरी माहौल बहाल करने का प्रयास करेगी। साथ ही, तालीम और कैंपस के मुद्दों को भी संबोधित करेगी और अपनी फ़िक्र पर आधारित नैरेटिव तैयार करेगी।

एसआईओ मदरसों के छात्रों और स्नातकों पर विशेष ध्यान देगी और उनसे लाभान्वित होने का प्रयास करेगी। उनकी सलाहियतों को परवान चढ़ाने की कोशिश की जाएगी ताकि वे सामाजिक सरगर्मियों से जुड़े रहें। साथ ही, तंज़ीम उपमहाद्वीप (subcontinent) की इस्लामी इल्मी रिवायत से संबंध जोड़ने का काम करेगी।

दीनी मदरसे हिंदुस्तान में मिल्लत-ए-इस्लामिया के इतिहास में एक सुनहरा अध्याय हैं। मदरसों के छात्र मिल्लत की बेशक़ीमती धरोहर हैं। उनकी सलाहियतों का सदुपयोग करना तंज़ीम की तरजीह होगी। साथ ही, उन्हें सामाजिक सरगर्मियों के साथ जोड़ने के लिए तैयार किया जाना चाहिए ताकि वे समाज के नवनिर्माण में अपनी भूमिका निभा सकें। इस संबंध में तहरीक-ए-इस्लामी से जुड़े मदरसों के छात्रों पर विशेष ध्यान दिया जाएगा। उपमहाद्वीप की तारीख़ बड़े मुजतहिदीन व अकाबिर उलेमा किराम की क़ाबिल-ए-क़द्र इल्मी विरासत रही है। और ये इल्मी मीरास भी चौदह सौ साल की तारीख़ की विरासत का क़ाबिल-ए-फ़ख़्र हिस्सा है। इन इल्मी रिवायात से फ़ायदा उठाना भी तंज़ीम की कोशिशों का हिस्सा होगा।

एसआईओ समाज में न्याय की स्थापना के लिए छात्रों और नौजवानों के बीच राय हमवार करेगी। इस मक़सद के लिए मुसलमानों और दूसरे मज़लूम तबक़ों के अधिकारों की रक्षा के लिए इज्तेमाई कोशिशें करेगी।

हालिया बरसों में, मानवाधिकारों के उल्लंघन की सुनियोजित कोशिशों के ज़रिए ख़ौफ़ और मायूसी का माहौल पैदा करने की कोशिश की जा रही है। ख़ास तौर पर मुसलमानों और अन्य मज़लूम तबक़ों की तालीमी, समाजी और शहरी हैसियत को कमज़ोर करने की लगातार कोशिशें चिंताजनक हैं।

ये कोशिशें जिनमें अल्पसंख्यकों, ख़ास तौर पर मुसलमानों, के ख़िलाफ़ हिंसा की घटनाएं, धार्मिक पहचान जैसे हिजाब और गिरजाघरों पर हमले, मकानों पर बुल्डोज़र चलाना और दूसरी तरफ़ अल्पसंख्यक धर्म को क़ुबूल करने वालों के ख़िलाफ़ क़ानूनों का बनना महज़ संयोग नहीं बल्कि सुनियोजित और संगठित प्रयासों का हिस्सा हैं।

इस सिलसिले में एसआईओ छात्रों और नौजवानों को प्रोत्साहित करेगी कि वे इस्लामी सिद्धांतों की रौशनी में इन चुनौतियों का सामना करें। इसके अलावा, एसआईओ रिसर्च और एडवोकेसी के ज़रिए भी काम करेगी, इंसाफ़ पसंद गिरोहों और और मुख़्तलिफ़ स्टेकहोल्डर्स के साथ मिलकर काम करने की कोशिश की जाएगी।

मौजूदा क़ानूनों का तनक़ीदी जायज़ा और उनमें संशोधन के लिए सुझाव देने को तरजीह दी जाएगी ताकि धार्मिक आज़ादी और धार्मिक अल्पसंख्यकों के अधिकारों की रक्षा की जा सके। नाइंसाफ़ी का मुक़ाबला करने, अमन को फ़रोग़ देने और इंसाफ़ को यक़ीनी बनाने पर तवज्जो दी जाएगी। एसआईओ राष्ट्रीय स्तर, प्रदेश स्तर व स्थानीय स्तर पर मुद्दों को उठाने और उन्हें हल करने पर ज़ोर देगी।

एसआईओ इस्लामी उसूलों के अनुसार पर्यावरण संरक्षण के लिए छात्रों एवं नौजवानों में संवेदनशीलता पैदा करेगी।

क़ुदरती माहौल और संसाधनों के ग़लत उपयोग के नतीजे में पैदा होने वाला पर्यावरण संकट दुनिया भर में एक संगीन मुद्दा बन गया है। यह समस्या महज़ पर्यावरण संकट नहीं है बल्कि एक जटिल समस्या है जिसमें वैचारिक, आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक तथा स्वास्थ्य से संबंधित पहलू शामिल हैं। इस संबंध में एसआईओ इस्लाम की 'इमारतुल अर्ज़' की अवधारणा पेश करेगी। साथ ही, एसआईओ छात्रों और नौजवानों को इस्लामी उसूलों पर आधारित नैरेटिव तैयार करने के बारे में जागरूक करेगी और मनुष्यता और पर्यावरण के शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व की वकालत करेगी। एसआईओ अपने सदस्यों के बीच 'नागरिक भावना' को भी बढ़ावा देगी और ज़रुरत के अनुसार अन्य संगठनों और व्यक्तियों के साथ संयुक्त रूप से संघर्ष करेगी। एसआईओ पर्यावरण पर काम कर रहे अन्य संगठनों के साथ मिलकर पर्यावरण के मुद्दों को राज्य, पॉलिसी, एडवोकेसी और एजेंसी के हवाले से संबोधित करेगी।

एसआईओ छात्रों और नौजवानों में आर्ट, सक़ाफ़त और अदब को उसकी मानवीयत के साथ फ़रोग़ देगी ताकि उनसे इस्लामी मूल्यों को बढ़ावा दिया जा सके। साथ ही, छात्रों और नौजवानों की रचनात्मक सलाहियतों के विकास पर ख़ास ध्यान दिया जाएगा।

अल्लाह तआला की ज़ात सुंदर है और वह सुंदरता का स्रोत है। उसने दुनिया को ख़ूबसूरत बनाया और इंसान के अंदर उसे सराहने का गुण भी रखा। कला और साहित्य, सौंदर्य अभिव्यक्ति के प्राकृतिक रूप और सांस्कृतिक पूंजी हैं। इस्लाम के मानने वालों को अपनी रचनात्मकता को विकसित करने का प्रयास करना चाहिए और मूल्यों पर आधारित कला और साहित्य का सृजन करना चाहिए। इस संबंध में, तंज़ीम अपने संदेश को फैलाने और प्रभाव को बढ़ाने के लिए सांस्कृतिक माध्यमों को बनाने और उपयोग करने के लिए अपने अफ़राद की हौसला अफ़ज़ाई करेगी।

एसआईओ इन्फ़ॉर्मेशन और कम्यूनिकेशन टेक्नोलॉजी (ICT) के ज़रिए उपजे चैलेंजों, ख़ास तौर पर डिजिटल एडिक्शन की समस्या, का तनक़ीदी जायज़ा लेगी और गैजेट्स के संतुलित इस्तेमाल को फ़रोग़ देगी। साथ ही, प्राइवेसी और निगरानी (Surveillance) के मुद्दों को इस्लामी दृष्टिकोण से चर्चा का विषय बनाएगी।

तंज़ीम का एहसास है कि इन्फ़ॉर्मेशन और कम्यूनिकेशन टेक्नोलॉजी (ICT) ने जहां एक तरफ़ सीखने, इस्लाम का पैग़ाम पहुंचाने और दूसरे अच्छे कामों के लिए रास्ते खोले हैं, वहीं दूसरी तरफ़ डिजिटल डिवाइसेज़ की लत और उनके बेतहाशा इस्तेमाल ने अनैतिकता के सैलाब और बहुत-से जिस्मानी और नफ़्सियाती मसाइल को भी जन्म दिया है। इस सिलसिले में तंज़ीम अख़लाक़ी हस्सासियत और टेक्नोलॉजी के संतुलित और सही इस्तेमाल पर ज़ोर देगी।

डिजिटल एडिक्शन और ज़रुरत से ज़्यादा स्क्रीन पर वक़्त गुज़ारने की वजह से एकाग्रता में कमी, इनसोम्निया और ग़ैर सेहतमंद रवैये पैदा हुए हैं। इन समस्याओं पर बात करने के लिए तंज़ीम डिजिटल एडिक्शन की संगीनी के संबंध में जागरूकता पैदा करने और गैजेट के नैतिक इस्तेमाल के सिलसिले में रहनुमाई फ़राहम करेगी।

इन्फ़ॉर्मेशन और कम्यूनिकेशन टेक्नोलॉजी (ICT) के संबंध में प्राइवेसी के ख़तरे सबसे ज़्यादा अहम हैं। सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म्स, डेटा की चोरी और प्राइवेसी का हनन करते हुए अपने फ़ायदे के लिए लोगों को Commodity में तब्दील कर रहे हैं। एसआईओ State Surveillance और कमज़ोर वर्गों की प्रोफ़ाईलिंग के मुद्दे को भी उठाएगी।

जूनियर एसोसिएट्स की नफ़्सियात का ख़्याल रखते हुए उनकी तरबियत इस तरह की जाएगी कि उनमें इस्लाम के प्रति प्रेम, बेहतर अख़लाक़ व सलाहियतें और तंज़ीम से वाबस्तगी का जज़्बा पैदा हो।

कम उम्र छात्रों के की तरबियत और उनकी सलाहियतों का फ़रोग़ बहुत ज़रूरी है। इस सिलसिले में, सभी ज़ोन और यूनिट इस बात पर ध्यान देंगे कि मुहल्ले और स्कूलों में आयोजित होने वाले प्रोग्राम जूनियर एसोसिएट्स की उम्र, स्वभाव, नफ़्सियात और ज़रुरतों के मुताबिक़ हों। इन सरगर्मियों के ज़रिए से उनमें इस्लाम के प्रति प्रेम की भावना पैदा हो, उनका अख़लाक़ और किरदार बेहतर से बेहतर हो, उनकी रचनात्मकता और सलाहियत विकसित हो और उनका तालीमी मेयार बुलंद हो। इसके अलावा बच्चों में पढ़ने का शौक़ पैदा करना भी बहुत ज़रूरी है। मौजूदा दौर में बच्चों की ज़हनी व नफ़्सियाती सेहत पर बहुत ध्यान देने की ज़रूरत है। बच्चों की ज़हनसाज़ी में सक़ाफ़ती ज़रिए भी बहुत प्रभावी रोल निभा रहे हैं। इस सिलसिले में दुनिया भर में मौजूद कंटेंट की फ़राहमी, तैयारी और प्रचार-प्रसार भी तंज़ीम के सामने होगा। तंज़ीम में में जूनियर एसोसिएट्स को शामिल करने के लिए भी गंभीर कोशिशों और विशेष ध्यान देने की ज़रूरत है।

एसआईओ अपनी सरगर्मियों में तंज़ीम के विस्तार एवं मज़बूती पर समान रूप से ध्यान देगी ताकि छात्रों एवं नौजवानों बड़े स्तर पर उससे जुड़ें, उसका प्रभाव दूर तक फैले और उसके अफ़राद में तंज़ीमी शऊर, नज़्म की पाबंदी और फ़िक्री हमआहंगी पैदा हो। इस सिलसिले में चयनित इलाक़ों पर ख़ास तवज्जो दी जाएगी।

एसआईओ का पैग़ाम देश के छात्रों एवं नौजवानों में आम करने, इस का प्रभाव क्षेत्र बढ़ाने और बड़ी तादाद में उन्हें तंज़ीम से जोड़ने के लिए बुनियादी सरगर्मियों में क्रिएटिविटी और हुस्न पैदा किया जाएगा। साथ ही, अफ़राद को जोड़ने के लिए नई राहें और सरगर्मियां तलाश की जाएंगी। बेहतरीन सलाहियतों के अफ़राद और अहम इदारों के छात्रों को मुख़ातिब करने और तंज़ीम का हिस्सा बनाने की कोशिश की जाएगी। जिन इलाक़ों में तंज़ीम कमज़ोर है (राज्य, ज़िला, शहर, मोहल्ला) वहां इस सिलसिले में ख़ास ध्यान दिया जाएगा।

ये भी ज़रूरी है कि तंज़ीम के अफ़राद में तंज़ीमी शऊर, नज़्म की पाबंदी और फ़िक्री हमआहंगी पाई जाए। साथ ही तंज़ीम के अफ़राद को तरग़ीब दी जाए कि वे तंज़ीम के मक़ासिदको लेकर लगातार सरगर्म रहें और मिशन से वालिहाना मोहब्बत, आपसी भाईचारे, ख़ुलूस, हमदर्दी, ख़ैरख़्वाही, क़ुर्बानी और अज़ीमत का मुज़ाहिरा करें। सेहतमंद तंज़ीमी कल्चर (इताअत-ए-अम्र, फ़ैसलों का एहतेराम, नज़्म-ओ-ज़ब्त की पाबंदी व तआवुन और टीम स्पिरिट वग़ैरह) के फ़रोग़ और मुक़ामी इलाक़ों में काम पर ख़ास तवज्जो दी जाएगी।

प्रोग्राम

तज़किया

- यूनिट्स लाज़िमी तौर पर कुरआन रीडिंग सर्किल (Qur'an Reading Circle) का एहतेमाम करेंगी।
- मेम्बर्स कुरआन मजीद से ज़िंदा और मज़बूत ताल्लुक़ क़ायम करने और सीरत व अहादीस-ए-रसूल (सल्ल0) से शऊरी तौर पर जुड़ेंगे।
- ज़िम्मेदारान की जानिब से मेम्बर्स के ज़ाती एहतिसाब पर ख़ास तवज्जो दी जाएगी।
- मेम्बर्स तहरीक-ए-इस्लामी की बुनियादी फ़िक्र की तशरीह करने वाली किताबों के मुता'अले पर ख़ास तवज्जो देंगे।
- मेम्बर्स मसनून अज़्कार को अपनी आदत बनाएंगे। इस सिलसिले में 'मासूरात' और 'हिस्न-उल-मुस्लिम' जैसी किताबों का मुता'अला किया जा सकता है।
- मरकज़ की सतह पर 'हफ़्ता-ए-इन्फ़ाक़' मनाया जाएगा।
- मरकज़ की सतह पर तज़किया मुहिम मनाई जाएगी।
- 'ज़ोनल लीडर्स तरबियत कैंप' आयोजित किया जाएगा।
- मरकज़ की जानिब से मुदर्रिस-ए-कुरआन कोर्स का एहतिमाम किया जाएगा।
- मरकज़ स्टडी सीएसी और ज़ोन स्टडी ज़ेडएसी का एहतिमाम करेंगे।
- तज़किया गाइड तैयार की जाएगी और इसकी रौशनी में मेम्बर्स इनफ़िरादी तज़किया ख़ाका तैयार करेंगे।
- फ़ुरूई मामलात में ग़ुलू और बे-ऐतिदाली को मुख़ातिब किया जाएगा।

जिंसी अख़लाक़ियात

- जिंसी और नफ़्सियाती मसाइल को मुख़ातिब करने के लिए मरकज़ी मुहिम मनाई जाएगी।
- अफ़राद की तैयारी के लिए मरकज़ी सतह पर ट्रेनिंग वर्कशॉप का एहतिमाम किया जाएगा।
- प्री-मैरिज वर्कशॉप का एहतिमाम किया जाएगा।
- जिंसी बेराहरवी और नफ़्सियाती मसाइल से संबंधित कंटेंट तैयार किया जाएगा।
- यूथ हेल्पलाइन के काम को जारी रखा जाएगा।
- Mental Wellness Forum को मज़बूत किया जाएगा।

फ़िक्र-ए-इस्लामी

- मरकज़ की सतह पर ज़ेडएसी की इल्मी और फ़िक्री तरबियत के लिए कैंप का एहतिमाम किया जाएगा।
- फ़िक्र-ए-इस्लामी के सिलसिले में मरकज़ वर्कशॉप और लेक्चर्स का एहतिमाम करेगा।
- फ़िक्र-ए-इस्लामी के मौज़ू पर अकेडमिक कॉन्फ्रेंस का आयोजन किया जाएगा।
- फ़िक्र-ए-इस्लामी से संबंधित कंटेंट की तैयारी पर ख़ास तवज्जो दी जाएगी।

दावत

- मरकज़ की सतह पर दावती मुहिम मनाई जाएगी।
- Understanding Indian Society के मौज़ू पर प्रोग्राम आयोजित किए जाएंगे।
- दावत के सिलसिले में मुंतख़ब अफ़राद की तैयारी की जाएगी।
- मुस्लिम समाज की अमली ख़ूबियों के मुशाहिदे के ज़रिए दावत-ए-दीन की सरगर्मियों को यूनिट्स और ज़ोन की सतह पर ख़ास तवज्जो दी जाएगी। जैसे: मस्जिद विज़िट, मदरसा विज़िट, घरों पर इनफ़िरादी दावत वग़ैरह।
- मरकज़ की सतह पर हिन्दुस्तानी समाज की समझ के हवाले से पहले से मौजूद कंटेंट की तरसील और नए कंटेंट की तैयारी के काम को आगे बढ़ाया जाएगा।

कैपेसिटी बिल्डिंग

- Inqhab को मज़बूत किया जाएगा।
- यूनिवर्सिटीज़ में दाख़िले के रुझान को बढ़ाने के लिए मरकज़ और ज़ोन्स की सतह पर सरगर्मियां अंजाम दी जाएंगी।
- ख़ास मैदानों में कैपेसिटी बिल्डिंग से संबंधित वर्कशॉप्स आयोजित की जाएंगी।

इस्लामी फ़लसफ़ा-ए-इल्म व तालीम

- रिसर्च स्कॉलर्स और मुंतख़ब तलबा के लिए Episteme वर्कशॉप का आयोजन किया जाएगा।

तालीम

- मुसलमानों की तालीमी सूरत-ए-हाल से संबंधित विषयों पर तहक़ीक़ी काम किया जाएगा।
- Indian Knowledge System (IKS) पर सेमिनार या सिम्पोज़ियम आयोजित किया जाएगा।
- History Summit का आयोजन किया जाएगा।
- RTE और इस्लामोफ़ोबिया पर तहक़ीक़ी काम को जारी रखा जाएगा।
- पार्लियामेंट वॉच को जारी रखा जाएगा।

कैंपस

- कैंपस में वेलफ़ेयर और अकेडमिक सरगर्मियों को अंजाम दिया जाएगा।
- एसआईओ कैंपसों में स्टूडेंट्स यूनियन की बहाली के लिए जद्दोजहद करेगी।
- CERT और CCS के साथ मिलकर अकेडमिक सेमिनार का आयोजन किया जाएगा।
- कैंपसों में 'Idea of University' पर लेक्चर सीरीज़ का एहतिमाम किया जाएगा।
- नेशनल कैंपस लीडर्स वर्कशॉप का आयोजन किया जाएगा।
- प्रोफ़ेशनल कैंपस वर्कशॉप का आयोजन किया जाएगा।

दीनी मदारिस

- Deeni Madaris Summit का आयोजन किया जाएगा।
- इस्तेदाद सीरीज़ को जारी रखा जाएगा।

पीआर व मीडिया

- नेशनल पीआर व मीडिया वर्कशॉप का आयोजन किया जाएगा।
- ज़ोन्स Alternative Media के इस्तेमाल से संबंधित ट्रेनिंग प्रोग्राम आयोजित करेंगे।
- हिन्दी मीडिया पर ख़ास तवज्जो दी जाएगी। इस सिलसिले में हिन्दी इलाक़े के ज़ोन्स ख़ास तौर पर प्रोग्राम आयोजित करेंगे।

पर्यावरण

- परिसर संवाद को मज़बूत किया जाएगा।

एस.आई.ओ. गुजरात जोन के प्रोग्राम

जनवरी 2025 से दिसंबर 2025

फोकस एरिया(2025) :

- तज़किया : कुरआन रीडिंग & लर्निंग
- तंजीम : तौसीअ व इस्तहकाम (SIC, SIO स्कूल, SIO तारुफि मुहीम, तरबियती प्रोग्राम)
- सोशियल इंगेजमेंट: एजुकेशन कैंपेन, सोशियल जस्टिस,

इन्फिरादी जिम्मेदारियां

• अफ़रादे तंजीम के लिए खुद एहतसाबी फॉर्म तैयार किया जाएगा, जिसे कैडर एहतेसाबी मुलाकात में जिम्मेदारान के सामने पेश करेंगे।

2.सभी मेंबर्स तफ़हीमूल कुरआन का मुताला करेंगे।

3.हर मेंबर कुरआन की सही तिलावत (तजवीद के साथ) और रसूल स.अ.व का रेगुलर मुताला करेगा।

4.सभी मेंबर्स वक़्तन फ़वकतन क़ब्रिस्तान की जियारत करेंगे।

5.सभी मेंबर्स मुताले के लिए दिन में कम से कम 30 मिनट देंगें।

6.सभी मेंबर्स यूनिट प्रेसिडेंट को, और ZAC मेंबर्स और यूनिट प्रेसिडेंट/सर्कल ऑर्गनाइजर जोनल प्रेसिडेंट के पास 6 महीने का इन्फिरादी मंसूबा पेश करेंगे।

7. साल के आखिर तक हर मेम्बर को कम से कम 1 एसोसिएट को मेम्बर और 5 नए एसोसिएट बनाने होंगे।

8. हर मेम्बर दाईयाना किरदार को सामने रखते हुए शऊरी तौर पर पांच बिरादराने वतनसे दोस्ती करेगा ।

तज़किया, फिकरे इस्लामी और मुताला

तंजीम से वाबस्ता अफराद के लिए तजकिया यानी खुदकी पाकीजगी के लिए मंदर्जा जेल खाके के मुताबिक अपनी ओर दूसरे मुस्लिम तलबा और नवजवानों की जिंदगी बेहतर बनाने की कोशिश की जाएगी।

- बुनयादी अकाइद की गहराई से समझ और पुख्ता यकीन।
- दिल के मतलुबा हालात (फिक्रे आखिरत खुदा का खौफ, कुर्बानी का जज्बा, सब्र, इरादे में पुख्तगी, अल्लाह पर यकीन, अल्लाह का शुक्र, अल्लाह और उसके रसूल से मुहब्बत, सारे इन्सानी समाज के लिए खैरख्वाही ओर सिलारहमी) पैदा की जाए।
- इस्लामी तहरिकात के लिए दिल से गहरा ताल्लुक बनाना और इल्म के मुख्तलिफ शौबो को इस्लामी नुक्ता ए नजर से समझना।
- नजरियात को हर तरह की जहालत ओर माददीयत (केरियरिज्म और कंज्यूमरीजम) से आजाद करना।
- कुरआन से मजबूत ताल्लुक पैदा करना।
- खुद एहतेसाब करना।
- जिन्दगी को हर बुराइयों से पाक करना।
- बेशर्मी और बेहयाई के कामो से दूर रहना, अख्लाकी हस्सासियत परवान चढाना, जिन्दगी को इस्लामी तालीमात के मुताबिक ढालना।
- फ़र्ज़, नफल नमाज, दुआ, ज़िक्र और अस्तगफ़ार का एहतेमाम करना, तिलावत ओर कुरआन का मुताअले का एहतमाम करना।
- अच्छे और नेक लोगो की सोहबत इख्तियार करना।
- मस्जिद से जुड़ना।
- राहे खुदा में वक्त सलाहियत ओर माल को लगाना।
- इस्लाम के पैगाम को आम करने की कोशिश करना।
- सलाहियतों को सही रुख में बढ़ाने की कोशिश करना।
- जिस्मानी तंदुरुस्ती को मजीद बेहतर करना।
- इल्म ओर मुतालए का शौक पैदा करना।
- तालीम में खुद को बेहतर बनाना।
- वक्त ओर माल का सही इस्तेमाल करना।
- टेकनोलोजी के नुकसानात से बचना और ज़रूरत के हिसाब से उसका इस्तेमाल करना (तजकीया के तहत दी हुई हिदायात को पहुंचाने की कोशिश हफ्तावारी इज्तेमा, तरबियती इज्तेमा में जिम्मेदारान के बयानात के जरिए की जाएगी)

- हर यूनिट लाज़मी तौर पर मे`यारी महाना तरबियती प्रोग्राम का इनेकाद करेगी, इज्तेमाई एहतसाब दो महीने, और इन्फिरादी एहतसाब हर महीने जोन की तरफ से लिया जाएगा।
- मुताला ए कुरआन तरबियती प्रोग्राम का हिस्सा होगा।
- मरकज की सतह पर इन्फाक विक मनाया जाएगा।
- जोन की तरफ से यूनिट लीडर तरबियती कैम्प का इनेकाद किया जाएगा।
- जोन की सतह पर स्टडी ZAC का इनेकाद किया जाएगा।
- रमजान तज़्किया माह के तौर पर मनाया जाएगा।
- जोन की सतह पर तज़्किया मुहीम मनाई जाएगी।
- “बुक ऑफ दी मंथ” सिरीज का इनेकाद किया जाएगा।
- यूनिट की सतह पर हफ़्ते में एक दिन कुरआन रीडिंग सर्कल का इनेकाद किया जाएगा,जिसमें कैडर तिलावते कुरआन और हिफ़्ज़े कुरआन पर तवज्जह देंगे।

दावत

- दावत के मोजु पर जोन की तरफ से एक खुसुसी तरबियती प्रोग्राम बनाकर यूनिट को दिया जाएगा।
- हर यूनिट लाज़मी तौर पर दावती एक्टिविटी करेगा, यूनिट नीचे दी गई एक्टिविटीज कर सकती हैं।

  बुक स्टॉल :(स्कूल,कॉलेज, यूनिवर्सिटी, पब्लिक प्लेस वगेरह)

  लिटरेचर बुक डिस्ट्रीब्यूशन:(स्कूल, कॉलेज, यूनिवर्सिटी, वगेरह)

  दावाह मिट: (टी पार्टी, इफ्तार पार्टी,ईद मिलन वगेरह)

  मस्जिद परिचय (visit my mosque)
- सभी मेंबर्स दावती ओरिएनटेशन और एक्टिविजम के लिए मुकामी जमात की दावती एक्टिविटी में शामिल रहेंगे।
- यूनिटस बिरादराने वतन की तंजीम और ग्रुप्स के साथ मिलकर खिदमते खल्क काम करेगी।

जिनसि एख्लाकियात

- जोन की सतह पर यूथ इशु कैंपेन मनाया जाएगा।
- युवासाथी और डिजिटल प्लेटफॉर्म के जरिए कॉन्टेंट क्रिएशन और उसे फैलाने का काम किया जाएगा।

तंजीम (तौसीअ व इस्तेहकाम)

- साल के इख़्तेताम तक नीचे दिए गए सर्कल्स यूनिट्स बनाए जाएंगे।

  1.भरूच

  2. हिम्मतनगर

  3. वीजापुर

  4. दाणीलीम्डा (अहमदाबाद)

- नीचे दिए गए मुक़ामात पर साल के इख़्तेताम तक नए सर्कल्स कायम किए जाएंगे।

  1. नंदासन

  2. गोधरा

  3. गांधीनगर

  4. अमरेली

  5.गिर सोमनाथ

  6.अजवा रोड/तानदड़जा (बरोड़ा)

  7.अमन सोसायटी (सूरत)

  8. रेशम वाडा (सूरत)

- जोन इन सर्कलस पर मुकामी जमात की मदद से नीचे दिए गए प्रोग्राम्स का इनकाद करने की कोशिश करेगा।

  स्टूडेंट्स ओरिएंटेशन प्रोग्राम.

  आउटरीच एक्टिविटी.

  तौसीअके मुक़ामात में SIO स्टार्स पर खुसूसी तवज्जह दी जाएगी.

- अहमदाबाद और सूरत के सिटी स्ट्रक्चर को मजबूत किया जाएगा।
- साल में 2 बार Regional SIO स्कूल का इनेकाद किया जाएगा।
- SIO Introduction Campaign का इनेकाद किया जाएगा।
- यूनिट हैंडबुक तैयार की जाएगी।
- लोकल लीडर्स के लिए पॉलिसी एक्सप्लेनेशन का इनेकाद किया जाएगा।
- अहमदाबाद और सूरत में सीटी और एक्सपांसन के इलाको में जोन की सतह पर SIC(समर इस्लामिक कैंप) किया जाएगा।

तालीम

- जोन की सतेह पर तालिमी मुहीम चलाए जाएगी
- CERT की रहनुमाई में RTE पर रिसर्च और डॉक्यूमेंटेशन का काम किया जाएगा
- रियासत के तालीमी मुद्दे और तालीमी मुआमलात को जोन के तहत उठाया जाएगा।
- हॉप स्टूडेंट्स सेंटर को मजबूत किया जाएगा।

कैंपस

- कैंपस एक्टिविज्म के लिए अहमदाबाद,बरोड़ा,सूरत के कैंपस को फोकस किया जाएगा।
- कैंपस में कामकी मजबूती के लिये स्टूडेंट्स मिट, PR Meet, और इफ्तार मिट जैसी एक्टिविटी की जाएगी।
- Enjoy your exam कैंपेन चलाया जाएगा।
- सिलेक्टेड कैंपसिस में “आइडिया ऑफ यूनिवर्सिटी” लेक्चर सिरीज का इनेकाद किया जाएगा।
- आला तालीम की एहमियत पर “ग्रेजुएट मिट अप” का इनेकाद किया जाएगा।
- गुजरात के मुस्लिम्स हॉस्टल का डेटा जमा किया जाएगा

कैपेसिटी बिल्डिंग

- वीडियो एडिटिंग कोर्स किया जाएगा
- स्टूडेंट्स मेंबर्स के लिए साइकोमेट्रिक टेस्ट का इनेकाद किया जाएगा।
- Financial oppotunity and literacy oriantation, प्रोग्राम का इनेकाद किया जाएगा।
- सेल्फ एम्प्लॉयमेंट अवेयरनेस पर प्रोग्राम किया जाएगा।
- Business Idea Proposals के लिए Applications मंगाई जाएगी और Collaboration Opportunities तलाश की जाएंगी।

मदारीस

- मजलिस ए उलमा की मदद से मदारीस में काम को मजबूत किया जाएगा।
- इस्तेदाद कोर्स का तारुफ मदारीसमे कराया जाएगा।

इन्वायरमेंट

- यूनिट की सतह पर लोकल इन्वायरमेंट के इश्यूज को मुखातिब किया जाएगा।
- युवासाथी और डिजिटल मीडिया प्लेटफॉर्म के जरिए कॉन्टेंट क्रिएशन का काम किया जाएगा।

पब्लिक रिलेशन & मीडिया

- SIO Gujarat मीडिया से मजबूत रवाबित कायम करने की कोशिश करेगी।
- यूनिट की सतह पर PR और मीडिया के काम को मजबूत करने के लिए मुख्तलिफ ऐक्टिविटी की जाएगी(यूनिट नीचे दी गई एक्टिविटी कर सकती हे)

    1.डेटा प्रिपरेशन

    2. प्रेस रिलीज

    3. इंडिविजुअल मिट

    4. वर्क एंगेजमेंट

- जोन मुख्तलीफ समाजी व सियासी मुद्दोको नज़रियाती सतह पर मुखातिब करेगी।
- जोनल वेबसाईट लॉन्च की जाएगी
- युवासाथी के जरिए टेबल टोक्स और पैनल डिस्कशन का इनेकाद किया जाएगा।
- “समाजी इन्साफ” और Muslim Ghettoization in Gujarat पर एक सेमिनार किया जाएगा।

SIO Stars

- हर यूनिट SIO Stars कायम करेगी,जिन मुकाम पर कायम हे वहा उसे मजबूत किया जाएगा।
- अहमदाबाद और सूरत की सतह पर उड़ान चिल्ड्रन फेस्टीवल का इनेकाद किया जाएगा।

टेक्नोलॉजी ऐंड प्राइवेसी

- जोन की सतह पर Digital Detox workshop का इनेकाद किया जाएगा।
- युवासाथी और डिजिटल प्लेटफॉर्म के जरिए कॉन्टेंट क्रिएशन और उसे फैलाने का काम किया जाएगा।.

SIO Gujarat Zone
Yearly Calendar 2025

Month	Programs	Remark
January	Enjoy Your Exams	All Units
February	Leaders Camp	Zone
March	Ramzan Tazkiya Month Book of the Month	All Units
April	Video Editing Course Seminar on Social Justice	Zone
May	Summer Islamic Camp Leaders Tarbiyah Camp	All Units Zone
June	Regional SIO School Study ZAC	Zone
July	Education Campaign Graduate Meet-up	All Units Zone
August	Infaq Week Seminar on Muslim Ghettoisation	All Units Zone
September	SIO Introduction Campaign	All Units
October	Youth Issue Campaign Book of the Month Regional SIO School	All Units All Units Zone
November	Tazkiya Campaign	All Units
December	Udaan Children Festival	Ahmedabad & Surat

સ્ટૂડન્ટ્સ ઇસ્લામિક ઓર્ગેનાઇઝેશન ઓફ ઇન્ડિયા,
ગુજરાત ઝોન
બી-૪, કરિશ્મા કોમ્પ્લેક્ષ, ૧૩૨ ફુટ રીંગ રોડ, જુહાપુરા, અહમદાબાદ - ૩૮૦૦૫૫
Website: sio-india.org I Email: siogujarat@gmail.com